पद १८

(राग: यमन - ताल: त्रिताल)

दया करी श्रीमाणिका मां पाहि रे। त्राता त्रिजगदंतरी तुजविण नाहीं रे।।ध्रु.।। काम क्रोध अहंकार त्रिपुटीचें स्थान। लोभ मोह मत्सरादि कापूं पहाति मान।।१।। भवतोय सागरडोहीं बुडतों मी काढीं। त्रिविधतापें वेधिलों, वेदना ही तोडी।।२।। शरण मी जाऊं कवणा। तारी तारी मज नत मनोहर दीना रे।।३।।